

rote memorization, supporting value-oriented learning that cultivates ethical reasoning, emotional intelligence, and holistic development. Arts, yoga, music, and indigenous games are incorporated not merely as subjects but as culturally embedded methods fostering experiential engagement and reflection, consistent with Indian pedagogical traditions of immersive learning (NEP 2020 policy provision; Grokipedia, 2026). Teacher training and capacity building in IKS further ensure educators are equipped to implement experiential and reflective approaches effectively, facilitating deeper internalization of values beyond surface-level learning.

The policy's emphasis on experiential, practice-based, and value-oriented learning reflects ancient Indian pedagogical ideals, promoting a transformative learning paradigm where knowledge is lived, practiced, and internalized.

Conclusion-The National Education Policy 2020 represents a transformative step in reimagining Indian education by integrating Indian Knowledge Systems into curriculum and pedagogy. By reconnecting education with India's civilizational heritage, the policy seeks to nurture learners who are culturally confident, ethically grounded, and intellectually versatile. The role of NEP 2020 in promoting Indian Knowledge Systems lies not merely in curriculum reform but in redefining the purpose of education itself. By harmonizing tradition with modernity, the policy aspires to create a holistic education system capable of addressing contemporary global challenges while remaining rooted in India's timeless wisdom.

References

1. Aithal, P. S., & Aithal, S. (2020). *Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards achieving its objectives*. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences, 5(2), 19-41. <https://doi.org/10.47992/ijmts.2581.6012.010>
2. Altbach, P. G. (2014). *Global perspectives on higher education*. Johns Hopkins University Press.
3. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education.
4. Kumar, K. (2005). *Political Agenda of Education*. New Delhi: Sage Publications.
5. Kumar, K. (2019). *Education and social change in South Asia*. Orient BlackSwan.
6. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India. <https://www.education.gov.in>
7. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
8. Nair, S. (2020). Indian knowledge systems and the modern world. *Journal of Indian Philosophy and Culture*, 34(2), 45-60.
9. Nussbaum, M. (2010). *Not for Profit: Why Democracy Needs the Humanities*. Princeton University Press.
10. Radhakrishnan, S. (1951). *Indian philosophy* (Vol. 1). George Allen & Unwin.
11. Radhakrishnan, S. (1951). *Indian Philosophy*. London: George Allen & Unwin.
12. Sen, A. (2005). *The Argumentative Indian*. New Delhi: Penguin.
13. Sharma, R. (2021). Indian knowledge systems and the National Education Policy 2020: Reclaiming indigenous epistemologies. *Journal of Indian Education*, 47(3), 1-15.
14. Sharma, R. (2021). Reimagining curriculum through Indian knowledge systems under NEP 2020. *University News*, 59(32), 12-18

भारतीय ग्यान परंपरा तथा हिन्दी साहित्य

डॉ. सुधामणि एस.

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सरकारी रामनारायण चेल्लाराम वाणिज्य तथा प्रबंध महाविद्यालय, रेस
कोर्स रोड, बेंगलूरु. 560001
मो- 8971843352 ईमेल; sudhamani905@gmail.com

प्रस्तावना: भारतीय ग्यान परंपरा वैदिक काल से प्रचलित है। भारत देश अनेक परंपराओं और संस्कृतियों का देश है। हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने सदियों से विग्यान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद, दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय ग्यान प्रणाली हजारों वर्षों से विकसित वैदिक परंपराओं, दर्शन, विग्यान, कला और स्वदेशी प्रथाओं का एक विशाल संग्रह है। काव्य और शास्त्र दोनो ही भारतीय ग्यान परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वेद भारतीय संस्कृति, ग्यान और सभ्यता का मूल है। भारतीय ग्यान परंपरा का निर्वाह करते हुए अपने पथ पर अग्रसर हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा (वेद, उपनिषद, दर्शन) हिंदी साहित्य की आधारशिला है, जो आध्यात्मिकता, नैतिकता, और सामाजिक मूल्यों को साहित्य में प्रवाहित करती है। भक्ति काल में कबीर-तुलसी से लेकर आधुनिक काल तक, इस परंपरा ने भारतीय संस्कृति को संरक्षित किया। यह साहित्य जीवन दर्शन, योग, और समन्वय के साथ-साथ समाज को सुदृढ़ सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है।

बीजक शब्द : आध्यात्मिकता, नैतिकता, साहित्य, दार्शनिक, सांस्कृतिक भारतीय ग्यान परंपरा और हिन्दी साहित्य के मुख्य बिंदु
सांस्कृतिक धरोहर: यह साहित्य को सांस्कृतिक और दार्शनिक जड़ों से जोड़कर आध्यात्मिकता, नैतिकता और जीवन के गूढ़ रहस्यों को प्रस्तुत करता है। भक्ति साहित्य का योगदान: संत कवियों (कबीर, तुलसीदास, मीराबाई) ने लोकभाषा में भक्ति और ज्ञान का प्रसार किया, जिससे ज्ञान विद्वानों से निकलकर जनसामान्य तक पहुंचा।
दार्शनिक धाराएं: जैन, सिद्ध और नाथ साहित्य ने योग, हठयोग, अहिंसा और सामाजिक आडंबरों के विरोध के माध्यम से हिंदी भाषा को आकार दिया।

सामाजिक समरसता: यह परंपरा सहिष्णुता, प्रेम, समानता और भाईचारे का संदेश देती है, जो आज भी प्रासंगिक है।
आधुनिक साहित्य में छाप: प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु और अन्य लेखकों के साहित्य में प्राचीन ज्ञान परंपरा, लोकजीवन, और नैतिकता के तत्व स्पष्ट रूप से मिलते हैं।

सांस्कृतिक पहचान: भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रवाह हिंदी साहित्य को एक विशिष्ट पहचान और गहराई प्रदान करता है, जो उसे अपनी समृद्ध विरासत से जोड़े रखती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल हिंदी साहित्य के विषय-वस्तु को समृद्ध करती है, बल्कि यह साहित्य के माध्यम से समाज को एक स्वस्थ और कल्याणकारी दिशा भी प्रदान करती है। भारतीय ग्यान परंपरा अत्यंत विशाल एवं समृद्ध है। भारतीय ग्यान परंपरा के आधार पर ही संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का उगम हुआ। भारतीय ग्यान परंपरा विकसित होते भक्तिकाल में सर्वाधिक तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है। तुलसी, सूरदास महाकवियों ने भक्ति का महत्व, जीवन का आदर्श, सार्थकता को सामान्य जनता तक पहुंचाया। भारतीय ग्यान परंपरा का विकसित रूप गद्य, कविता, नाटक, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टाज जनता को नवीन चेतना, जागरूकता और सजगता की ओर ले जाती है। विभिन्न भाषायें तथा उनकी विभिन्न संस्कृतियों को भारतीय ग्यान परंपरा ने मोतियों के माला रूप में बांधा है।

